HISTORY, B.A.HONS.II - PAPER II

NAPOLEON'S CONTINENTAL SYSTEM (नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना)

1807 ई० में हुई टिलसिट (Tilsit) की संधि के समय नेपोलियन अपने चरमोत्कर्ष पर था। लगभग सम्पूर्ण यूरोप पर इस समय तक नेपोलियन का प्रभाव स्थापित हो चुका था। यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों आस्ट्रिया, प्रशा एवं रूस को वह क्रमशः 1805 ई. 1806 ई. एवं 1807 ई० में परास्त कर चुका था। यूरोप में केवल इंगलैण्ड ही एक ऐसा देश था जो फ्रांस को निरंतर चुनौती दे रहा था। ट्राफल्गर के युद्ध के पश्चात नेपोलियन समझ चुका था कि शक्तिशाली नौ-सेना के रहते इंगलैण्ड को पराजित करना सम्भव न था। इसी कारण नेपोलियन कहा करता था, "बालोन से फॉल्कस्टोन तक सेना भेजने की तुलना में पेरिस से दिल्ली सेना भेजना सरल है।" ऐसी स्थिति में इंगलैण्ड को परास्त करना अत्यंत कठिन था। इसी समय नेपोलियन को माण्टगेलार्ड ने परामर्श दिया कि इंगलैण्ड एक व्यापारिक देश था, अतः उसे आर्थिक युद्ध के द्वारा परास्त किया जा सकता है था। नेपोलियन ने इस परामर्श को स्वीकार किया तथा इंगलैण्ड पर जलमार्ग पर विजय करने के लिए त्याग दिया। नेपोलियन ने इंगलैण्ड से आर्थिक युद्ध करने के लिए नवीन एवं विशाल योजना द्वारा इंगलैण्ड के आयात निर्यात को बन्द करने का निश्चय किया। उसकी इस योजना को इतिहास में महाद्वीपीय योजना (Continental System) अथवा महाद्वीपीय अवरोध (Continental Blockade) कहा जाता है। नेपोलियन का विचार था कि यदि इंगलैण्ड के आयात-निर्यात को बन्द करा दिया जाये तो आर्थिक स्थिति के खराब होने तथा खाने-पीने की वस्तुओं के अभाव के कारण इंगलैण्ड को घुटने टेकने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसके साथ ही नेपोलियन यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था लागू करना चाहता था जिसका केन्द्र लंदन में न होकर पेरिस में हो। जैसा कि पामर ने भी लिखा है, "महाद्वीपीय व्यवस्था इंगलैण्ड के निर्यात को नष्ट करने की योजना थी। इसका उद्देश्य यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था को विकसित करना भी था जिसका मूल केन्द्र फ्रांस हो।"

नेपोलियन ने महाद्वीपीय योजना को कार्यान्वित करने के लिए अनेक आदेश जारी किये, वे आदेश निम्नवत थे :-

(i) <u>बर्लिन आदेश (Berlin Decree)</u> :- इसको नेपोलियन ने 21 नवम्बर, 1806 ई० को घोषित किया। इस आदेश में उसने कहा कि "ब्रिटिश द्वीप समूह तथा अंग्रेजी उपनिवेशों का घेरा प्रारम्भ किया जाता है। अब यदि ब्रिटिश द्वीप समूह अंग्रेजी उपनिवेशों का कोई जहाज फ्रांस अथवा उसके मित्र राष्ट्रों के किसी बन्दरगाह में प्रवेश करे तो उसे जब्त कर लिया जायेगा।" इस आदेश में यह भी कहा गया था कि यूरोप का कोई भी राज्य इंगलैण्ड से व्यापार नहीं करेगा। इंगलैण्ड के जितने भी लोग उन देशों में हों उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाये और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाये।

→

(ii) वार्सा आदेश (Warsaw Decree):- 25 जनवरी, 1807 ई० को नेपोलियन ने वार्सा आदेश जारी किए। इसके द्वारा प्रशा तथा हैनोवर के समुद्र तटों पर भी अंग्रेजी व्यापार के विरुद्ध प्रतिबंध लगा दिया गया। टिलसिट संधि के पश्चात् रूस, प्रशा तथा डेनमार्क ने भी ब्रिटेश माल का बहिष्कार कर दिया। इससे इंगलैण्ड को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा।

इंगलैण्ड द्वारा इन आदेशों का प्रत्युत्तर - नेपोलियन के आदेशों का जवाब देने के लिए इंगलैण्ड ने Order in Council पारित किया। इसके द्वारा घोषित किया गया कि:

(क) यदि किसी जहाज में फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों का बना हुआ सामान पाया जायेगा तो उसे जब्त कर लिया जायेगा।

(ख) अपने विदेशी व्यापार को बनाये रखने के लिए अंग्रेजों ने तटस्थ राज्यों को कम करों पर सामान देना घोषित किया।

(ग) कोई भी तटस्थ राज्य फ्रांस के किसी जहाज को न खरीदे।

(घ) इंगलैण्ड की ओर से व्यापार करने वाले तटस्थ देशों के जहाजों को प्रत्येक सुविधा प्रदान की जायेगी।

(ङ) प्रशा तथा पुर्तगाल आदि देशों द्वारा विवशता में महाद्वीपीय योजना स्वीकार की गई तथा उनके जहाजों को छोड़ दिया जायेगा।

इस प्रकार 'order in Council' के द्वारा इंगलैण्ड ने अपने व्यापार को सजीव बनाये रखने की चेष्टा की गयी।

(iii) मिलान आदेश (Milan Decrees):- 17 दिसम्बर, 1807 ई० को नेपोलियन ने मिलान आदेश पारित किया। इसके अनुसार यह घोषणा की गयी कि अंग्रेजी बन्दरगाहों में उपस्थित अथवा अंग्रेजों को तलाशी देने वाले जहाज को जब्त कर लिया जायेगा चाहे वह किसी भी देश का क्यों न हो।

इस समय इंगलैण्ड ने भी दूसरा "Order in Council" पारित किया। इसमें कहा गया था कि जो देश अंग्रेजी माल स्वीकार नहीं करेगा, इंगलैण्ड उसका अवरोध करेगा। तटस्थ देशों से कहा गया कि वे इंगलैण्ड के जहाजों को सुविधा प्रदान करें।

(iv) फ्राण्टेब्लू आदेश (Fontainebleau Decrees):- 18 अक्टूबर, 1810 ई० को नेपोलियन ने सबसे कठोर आदेश जारी किये, जिन्हें फ्राण्टेब्लू आदेश कहा जाता है। इन आदेशों में कहा गया कि जब्त अंग्रेजी सामान को जला दिया जायेगा। अवैध ढंग से व्यापार करने वालों के लिए कठोर दण्ड एवं पृथक् न्यायालय की स्थापना की गयी।

उपरोक्त आदेशों का इंगलैण्ड के अंग्रेजी व्यापार पर गहरा प्रभाव हुआ, किन्तु इसके पश्चात् भी तटस्थ देशों के जहाज छिपकर, अवैध रूप से उत्तरी सागर तथा मध्य सागर के देशों में माल पहुँचा रहे थे तथा वहाँ से यह माल स्थल मार्ग से यूरोप के विभिन्न देशों में पहुँचाया जाता था। इसके अतिरिक्त, फ्रांसीसी लाइसेंस के द्वारा भी व्यापार किया जा रहा था। इसको रोकने के लिए नेपोलियन ने अंग्रेजी वस्तुओं पर चुंगी लगा दी। इसप्रकार अंग्रेजी व्यापार की बहुत क्षति हुई।

→

उपरोक्त आदेश जारी करने के अतिरिक्त भी नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक प्रयास जिनमें निम्नलिखित प्रमुख थे –

(i) रूस के साथ समझौता – टिलसिट की संधि में रूस के जार के कारण इस योजना को स्वीकार करने के लिए नेपोलियन ने उसे फिनलैण्ड तथा पुर्वी का कुछ भाग देने का लालच दिया।

(ii) आस्ट्रिया पर दबाव – 28 फरवरी, 1808 ई० को नेपोलियन ने आस्ट्रिया को महाद्वीपीय योजना को स्वीकार करने के लिए विवश किया।

(iii) स्पेन पर अधिकार – नेपोलियन ने स्पेन के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था, अतः स्पेन ने स्वतः ही इस योजना को स्वीकारा।

(iv) पुर्तगाल पर अधिकार – नेपोलियन पुर्तगाल से इस योजना को स्वीकार करने के लिए कहा, किन्तु पुर्तगाल ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। अतः नेपोलियन ने पुर्तगाल पर आक्रमण किया। पुर्तगाल का राजा राज्य छोड़कर ब्राजील भाग गया। यहीं से प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular war) प्रारम्भ हुआ, जिसके व्यापक परिणाम हुए।

(v) पोप को बन्दी बनाना – पोप ने महाद्वीपीय योजना में भाग न लेते हुए स्वयं को तटस्थ घोषित कर दिया, अतः क्रोधित होकर नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण किया एवं उसे बंदी बना लिया। नेपोलियन द्वारा ऐसा करना उसकी एक राजनीतिक भूल थी क्योंकि ऐसा कर उसने कैथोलिकों को नाराज कर दिया।

(vi) प्रशा से संधि – महाद्वीपीय योजना में प्रशा को सम्मिलित करने के लिए नेपोलियन ने उससे संधि की।

(vii) स्वीडन को पराजित – 1808 ई० में नेपोलियन ने स्वीडन पर विजय प्राप्त करके उसे भी महाद्वीपीय योजना में शामिल किया।

(viii) हालैण्ड का फ्रांस में विलय – हालैण्ड का शासक नेपोलियन का भाई लुई बोनापार्ट था, किन्तु फिर भी वह वहां महाद्वीपीय व्यवस्था लागू न कर सका, अतः 9 जुलाई, 1810 ई० को नेपोलियन ने हालैण्ड को फ्रांस में मिला दिया।

12.8.2020